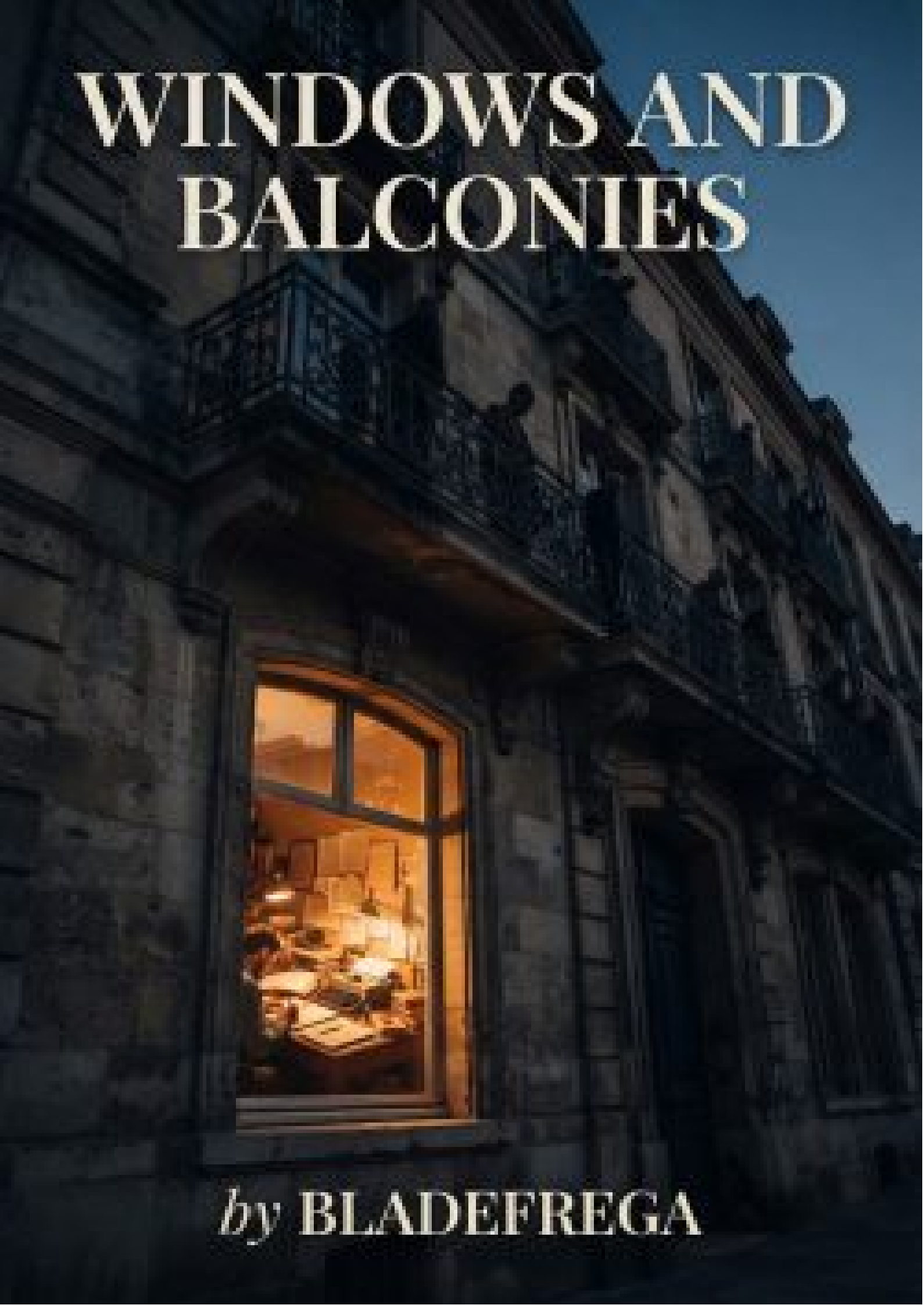

WINDOWS AND BALCONIES

by BLADEFREGA

खिड़कियाँ और बालकनियाँ

जब आदिम मनुष्यों ने स्तंभों पर टिके घर (स्टिल्ट-हाउस) बनाने का फ़ैसला किया, तो उन्होंने ऐसा जंगली जानवरों से बचने के लिए नहीं किया, जैसा बाद में किसी क़िस्सागो ने जनता को बेच दिया।

इसकी एक और वजह थी।

औरतें पहले से ही वहाँ थीं।

और ऊँचाई ही अहमियत तय करती थी।

स्टिल्ट-हाउस जितना ऊँचा होता, इज़्ज़त उतनी ही ज़्यादा होती।

बिल्कुल आज जैसा।

गगनचुंबी इमारतों में, चौकीदार भूतल पर रहते हैं।

दूसरे 'चौकीदार' सबसे ऊपरी मंज़िल पर रहते हैं।

वे लोग जिनकी वह इमारत है।

पर ठीक जब लगने लगा कि सब कुछ पूरा हो चुका है, औरतों ने फ़ौरन एक नई माँग उठा दी।

उन्हें दो चीज़ें चाहिए थीं।

खिड़कियाँ और बालकनियाँ।

पहली — अपनी सहेलियों से बात करने और आलोचनाएँ बाँटने के लिए।

दूसरी — अपनी सहेलियों के पतियों से बात करने और नज़र आने के लिए। आज से बहुत अलग नहीं।

प्रकाशक खिड़कियाँ हैं।

टेलीविज़न बालकनी है।

जब घर ख़रीदने का वक़्त आता, मंज़िल का चुनाव बिना समझौते वाला मसला बन जाता।

और जब हालात लोगों को नीचे की किसी मंज़िल पर समझौता करने पर मजबूर कर देते, तो सच्चाई को अक्सर एक ज़्यादा शालीन बहाने से बदल दिया जाता।

ऊँचाई से डर।

उन हालातों में से एक जिनसे किसी-न-किसी तरह हर कोई पैसा कमा ही लेता है।

कुछ लोगों ने दवा बेची।

कुछ और लोगों ने समाधान बेचे।

बाद में, दौलत नापने की इकाइयाँ बदल गईं।

विला।

स्विमिंग पूल।

गोल्फ़ कोर्स।

निजी जिम।

गेस्ट हाउस।

हेलीपैड।

और, स्वाभाविक रूप से, वह अनिवार्य 'गार्सोनियेर' (गुप्त फ़्लैट)। विचारों की प्राचीन भट्ठी।

वह जगह जहाँ मुश्किल पलों से उबरने में मदद के लिए उपयुक्त 'स्टाफ़' हमेशा मिल जाता।

अहाहाहाह।

पर वास्तुकला की यह सैर सिर्फ़ एक बहाना है।

मैं असल में जिसकी बात कर रहा हूँ, वह है इंसानी आत्मा की वास्तुकला।

ख़ासकर वह संस्करण जो किसी परिवार के भीतर बनता है।

वह जगह जहाँ सब कुछ की इजाज़त होनी चाहिए।

वह जगह जहाँ कुछ भी हैरान करने वाला नहीं होना चाहिए।

और फिर भी सबसे पहले आलोचना करने वाले अक्सर बच्चे ही होते हैं।

जो कुछ वे देख रहे होते हैं उसे समझने के लिए, वे अपने दोस्तों से एक दूसरी राय माँगते हैं।

मानो यह कहना हो:

“हम उससे प्यार करते हैं, पर सच कहें तो हमें कोई अंदाज़ा नहीं कि वह आख़िर कर क्या रहा है।”

क्या यह सच हो सकता है?

क्या यह मुमकिन है?

वह, इतने सारे लोगों में से?

पर वह तो बस मेरे पिता हैं। और मैं, न किसी बालकनी का मालिक, न टेलीविज़न का, खिड़की पर खड़ा रहना जारी रखता हूँ।

और मैं वे चीज़ें लिखना जारी रखता हूँ जिनकी किसी को उम्मीद नहीं।

क्योंकि, आख़िरकार, यही सब कुछ है जो मेरा अपना है।

BLADEFREGA